मनुष्य क्या है?

अध्याय 3

पाप का अभिशाप

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1
उत्पत्ति 1
मानव जाति 2
व्यक्ति 3
कर्तृत्व 5
चरित्र 10
व्यवस्था विरोधी 10
प्रेम न करना 12
परिणाम 16
भ्रष्टता 16
अवधारणाएं 17
व्यवहार 19
भावनाएँ 20
अलगाव 21
मृत्यु 23
उपसंहार 25

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मनुष्य क्या है?

अध्याय तीन

पाप का अभिशाप

प्रस्तावना

हम में से अधिकांश लोग बहुत सारे अंतिम संस्कारों के लिए गए हैं। भले ही हम केवल एक या दो के लिए ही गए हों, फिर भी यह बहुत अधिक है। मसीही अंतिम संस्कारों में, हम आशा को व्यक्त करते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि अंततः हम अपने खोये हुए दोस्तों और प्रिय जनों के साथ फिर से मिलेंगे। लेकिन हम फिर भी रोते हैं क्योंकि हम उस पीड़ा, कष्ट, दुःख और मृत्यु से घृणा करते हैं जिसे पाप ने हमारे संसार में पैदा किया है। हम मानते हैं कि यदि यह पाप न होता, तो कभी भी कोई अंतिम संस्कार नहीं होता। पाप ने हमारे संसार में, हमारे परिवारों में और हमारे अपने जीवनों में कहर बरपाया है। और यह अंततः हमें मार डालेगा। हम यहाँ तक कैसे पहुंचे? हमारे जीवनों में पाप की इतनी ज्यादा सामर्थ्य और उपस्थिति क्यों है?

मनुष्य क्या है? की हमारी श्रृंखला का यह तीसरा अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक, "पाप का अभिशाप" रखा है। इस अध्याय में, हम जाँच करेंगे कि बाइबल मानव पाप और विशेषकर मानवता पर इसके नकारात्मक प्रभावों के बारे में क्या कहती है।

पाप के कई प्रकार और स्तर हैं। लेकिन सभी के केंद्र में परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह करने वाली आत्मा है। वेस्टमिन्स्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म, जो कि मूल रूप से 1647 में प्रकाशित हुआ था, अपने प्रश्न और उत्तर 14 में पाप का एक विश्वव्यापी प्रोटेस्टेंट दृष्टिकोण व्यक्त करता है। इस प्रश्न के जवाब में कि "पाप क्या है?" कैटेकिज़्म उत्तर देता है:

> **परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ना, या उस के अनुरूप न होना, पाप है।**

जैसा कि हम इस पूरे अध्याय में देखेंगे, परमेश्वर की व्यवस्था का तिरस्कार और अवहेलना मानव के पहले पाप के केंद्र में था, और वे हमारी शापित स्थिति को चिन्हित करना जारी रखे हैं।

पाप के अभिशाप पर हमारा अध्याय तीन भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले हम मानवता के पाप की उत्पत्ति का पता लगाएंगे। दूसरा हम पाप के मौलिक चरित्र का वर्णन करेंगे। और तीसरा हम पाप के परिणामों पर गौर करेंगे। आइए मानवता के पाप की उत्पत्ति के साथ शुरू करते हैं।

उत्पत्ति

मानवता के पाप का अस्तित्व निर्विवाद है। लोग परमेश्वर के, एक-दूसरे के, दूसरे प्राणियों के, स्वयं संसार के, और यहाँ तक कि स्वयं अपने खिलाफ भी अनेक प्रकार के अत्याचार करते हैं। लेकिन पाप आया कहाँ से? मानव के पाप का मूल स्रोत क्या है? और पाप ने मानवता को कैसे संक्रमित किया है?

हम तीन दृष्टिकोणों से मानव के पाप की उत्पत्ति का पता लगायेंगे। सबसे पहले, हम मानव जाति में पाप की उत्पत्ति की समीक्षा करेंगे। दूसरा, हम व्यक्तियों में पाप की उत्पत्ति पर ध्यान केंद्रित करेंगे। और तीसरा, हम मानव पाप के लिए अंततः दोषी या कर्ता पर विचार करेंगे। आइए सबसे पहले, हम मानव जाति में पाप की उत्पत्ति को देखते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मानव जाति

हमारे अस्तित्व के शुरुआत में मानवता पाप में गिर गई। वास्तव में, यह पहले दो मनुष्य — आदम और हव्वा — थे जो पाप को मानव जाति में लाये। जैसा कि हमने पहले वाले अध्याय में देखा, आदम और हव्वा को पापरहित सृजा गया था। उनके पास पाप करने की कोई प्रवृति नहीं थी, और पाप करने का कोई कारण नहीं था। परमेश्वर उनके प्रति बहुत परोपकारी था। उनके पास उस पर विश्वास करने का कारण था, उसके द्वारा उनके लिए बनाए गए प्रावधानों से संतुष्ट होने के हर एक कारण थे, और उसके वाचा रूपी आशीषों में बने रहने की चाहत और उसके वाचा वाले अभिशापों से बचे रहने के हर एक कारण थे।

और उन वाचा वाली आशीषों में बने रहने और वाचा वाले अभिशापों से बचने के लिए, उन्हें परमेश्वर की वाचा की शर्तों के प्रति वफादार बने रहने की आवश्यकता थी। उत्पत्ति 1, 2 उन कई बातों को सूचीबद्ध करता है जो वाचा के प्रति वफादारी में समाहित थीं। इसमें मनुष्यों से पृथ्वी को भरने के लिए आदम और हव्वा का दायित्व शामिल था, और परमेश्वर की उपस्थिति के लिए इसे उपयुक्त बनाने के लिए इसका विकास करना था। उन्हें अन्य जीवों पर भी जिन्हें परमेश्वर ने बनाया था शासन करना था। और उन्हें अदन की वाटिका में काम करना और उसकी देखभाल करनी थी। इसके अलावा, उन्हें एक स्पष्ट निषेध दिया गया था: उन्हें भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाने से मना किया गया था।

इन वाचा वाले दायित्वों ने उन बातों के प्रकारों का जो परमेश्वर को प्रसन्न करते थे, और उन बातों के प्रकारों का जो उसे अप्रसन्न करते थे संकेत दिया। वो बातें जो उसे प्रसन्न करती थीं, परमेश्वर के वाचा वाली आशीषों के साथ पुरस्कृत किए जाएंगे। और वे बातें जो उसे अप्रसन्न करती थीं, वे परमेश्वर के वाचा वाले अभिशापों के माध्यम से दंडित किए जाएंगे।

दुःख की बात है, कि उत्पत्ति 3:1-7 में, सर्प ने हव्वा को निषिद्ध फल खाने के लिए लुभाया, और उसने ऐसा किया। फिर उसने उस में से कुछ आदम को दिया, और उसने भी खाया। तुरंत ही, उन्हें एहसास हुआ कि वे नंगे हैं और वे शर्म महसूस करते हैं। उत्पत्ति दावा नहीं करता कि वृक्ष के पास मनुष्यों को पापी बनाने की कोई शक्ति थी। इसके विपरीत, यह आदम और हव्वा की बेवफाई थी जिसके कारण उन्हें अपराधबोध और शर्म की अनुभूति हुई।

फिर, उत्पत्ति 3:8-24 में, परमेश्वर ने आदम और हव्वा का सामना किया, और उनकी बेवफाई के कारण उन्हें श्राप दिया। धर्मविज्ञानी अकसर घटनाओं के इसे पूरे संग्रह — सर्प के बहकावे से लेकर परमेश्वर के दण्ड तक — को “पाप में पतन” का नाम देते हैं। “पाप में पतन” यह नाम इस विचार को दर्शाता है कि आदम और हव्वा के पाप के कारण मानवता परमेश्वर की कृपा और आशीषों से वंचित हो गई। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 3:16 में, परमेश्वर ने हव्वा से कहा:

> मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी। और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा (उत्पत्ति 3:16)।

परमेश्वर के अभिशाप ने पृथ्वी पर परमेश्वर के स्वरूपों की संख्या बढ़ाने के लिए हव्वा के दायित्व को समाप्त नहीं किया। लेकिन इसने यह सुनिश्चित किया कि दायित्व को पूरा करना उसके लिए दर्दनाक होगा। इसने आदम के साथ उसके वैवाहिक संबंध में कलह को भी जन्म दिया। और उत्पत्ति 3:17-19 में, परमेश्वर आदम पर एक वैसा ही अभिशाप देता है।

> इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है; तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा। और वह तेरे लिए कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा। और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अंत में मिट्टी में

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> मिल जाएगा, क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है; तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा (उत्पत्ति 3:17-19)।

परमेश्वर ने पृथ्वी को वश में करने और विकसित करने के आदम के दायित्व को समाप्त नहीं किया। उसने बस इसे दर्दनाक और कठिन बना दिया। इससे भी बदतर, आदम और हव्वा दोनों पाप के कारण मृत्यु का अनुभव करेंगे।

> पाप में पतन के परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने पुरुषों और महिलाओं और, वास्तव में, संपूर्ण सृष्टि को दण्डित किया। इसलिए, उदाहरण के लिए, काम, जिसमें पाप में पतन से पहले आदम और हव्वा आनंद लेते थे, अब मुश्किल काम बन गया, और इस तरह, मनुष्यों का काम के साथ एक प्रेम-घृणा वाला संबंध है। एक और, कि पुरुष और महिला के बीच संबंध, भ्रष्ट और बिगड़ गए थे। प्रसव — परमेश्वर के और स्वरूपों की दोबारा सृष्टि करने के लिए परमेश्वर का एक और उपहार है — जो दर्दनाक बन गया, और मूलभूत रूप से, कुल मिलाकर परिणाम यह हुआ कि जो अच्छी चीज़ें परमेश्वर ने आदम और हव्वा को आनंद लेने के लिए दीं, उनका आंनद लेना जारी रहा, लेकिन वास्तव में, वे फिर, कुछ मायनों में भ्रष्ट और विकृत भी हो गई थी, और उनका संपूर्णता में आनंद नहीं लिया जा सकता था।
>
> — डॉ. सायमन वायबर्ट

हम नहीं जानते कि यदि आदम और हव्वा ने पाप नहीं किया होता तो क्या हुआ होता। कुछ लोगों का मानना है कि जब तक मनुष्य पाप नहीं करते, तब तक वे हमेशा के लिए वाटिका में रहते। दूसरों का मानना है कि वे परीक्षण अवधि में थे; और यदि वे अपने परीक्षण अवधि में सफल रहते, तो वे हमेशा के लिए जीवित रहे होते। लेकिन वास्तविकता यह है कि उन्होंने पाप *किया,* और यह कि उनका पाप मानव जाति में पाप का मूल था।

मानव जाति में पाप की उत्पत्ति को देख लेने के बाद, आइए उसकी ओर मुड़ें, जिस तरह पाप व्यक्तियों में प्रवेश करता है।

व्यक्ति

यदि आदम और हव्वा के पाप ने किसी और को प्रभावित नहीं किया होता, तब प्रत्येक मनुष्य उसी चुनाव का सामना करता जिसका सामना आदम और हव्वा ने किया था। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं अपने लिए निर्णय लेना होता कि वह पाप रहित रहेगा या पाप में गिर जायेगा। लेकिन पवित्र शास्त्र बताता है कि आदम और हव्वा पर पड़ा अभिशाप उनके सभी स्वाभाविक वंशजों के लिए लागू होता है — अर्थात यीशु को छोड़कर सब लोग। रोमियों 5:12-19 में आदम के पाप के लिए पौलुस ने जो लिखा उसे सुनिए:

> इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सब ने पाप किया ... [जैसा] एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ ...एक मनुष्य के आज्ञा न मानने [से] बहुत लोग पापी ठहरे (रोमियों 5:12-19)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आदम की अनाज्ञाकारिता के एक कार्य ने पूरी मानवता को दण्डित किया क्योंकि आदम मानव जाति का वाचा वाला मुखिया था। उसने न सिर्फ अपना , बल्कि साथ में अपनी पत्नी का, और हर उस दूसरे मनुष्य का प्रतिनिधित्व किया, जो प्राकृतिक मानव पीढ़ी के माध्यम से उनसे पैदा होंगे। उसके पाप को हमारे पाप के रूप में गिना गया। और उसका दोष हमारा दोष बन गया। और क्योंकि हम उस दोष में साझेदार हैं, हम मृत्यु और भ्रष्टता सहित उस दोष के खिलाफ़ परमेश्वर के अभिशाप में भी साझेदार हैं। यही कारण है कि पौलुस कह पाया कि आदम के पाप का परिणाम मानव मृत्यु हुई, और इसने सभी मनुष्यों को पापियों में बदल डाला। आदम के द्वारा, पाप ने हम सब को भ्रष्ट कर दिया है, जिससे हम पहले ही से आदम के पाप के दोषी होकर, पाप के गुलाम बनकर और मृत्यु की सजा पाकर इस संसार में जन्म लेते हैं। या जैसा कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:22 में लिखा है:

> आदम में सब मरते हैं (1 कुरिन्थियों 15:22)।

> परमेश्वर, आदम के पाप के लिए संघिय मुखिया के सिद्धांत के कारण सभी मानवता को जिम्मेदार ठहराता है। आदम हमारा संघीय प्रमुख था, और है। अब, एक राष्ट्र या एक राज्य के बारे में सोचना इसे समझने का एक तरीका है। दो राज्य हैं, और प्रत्येक राज्य का एक राजा है। यदि आप राज्य क के नागरिक हैं और राज्य क के राजा ने राज्य ख के खिलाफ युद्ध घोषित कर दिया है, क्योंकि वह आपका संघीय प्रमुख है, आप भी राज्य ख के खिलाफ युद्ध में हैं। इसी तरह से ईश्वरीय-ज्ञान में भी संचालन होता है। आदम हमारा संघीय प्रमुख है; हम सब आदम में हैं जब वह सृजा गया है। वह हमारा संघीय प्रतिनिधि है, इसलिए जब वह पाप में गिरता है, तो हम भी उसमें पाप में गिरते हैं। अब, यदि हमें इस बात से परेशानी है, तो हम मुश्किल में हैं, क्योंकि उद्धार भी इसी रीति से कार्य करता है। मसीह हमारा संघीय प्रमुख बनता है ताकि, जिस तरह आदम में, पौलुस रोमियों 5 में कहता है, "सबने पाप किया," वैसे ही मसीह में, हम सब जिलाये जाते हैं। इस तरह, हमारे संघीय प्रमुख के रूप में मसीह संपूर्ण व्यवस्था को पूरा करता है, जहाँ पहला आदम असफल हुआ था, वह सफल होता है और मृत्यु, नरक और कब्र पर जीत हासिल करता है। वह सिद्धता के साथ धर्मी है ताकि वह उस धार्मिकता को हमारे लिए गिन सके, और फिर हमारे संघीय प्रमुख, आदम, के कारण अपने निष्क्रिय आज्ञाकारिता में अपने ऊपर उस मृत्यु को लेता है जिसके हम हकदार थे, ताकि उसके निष्क्रिय और सक्रिय आज्ञाकारिता में हमारी पापमयता उसके लिए गिनी जाए और उसकी धार्मिकता हमारे लिए गिनी जाए। संघीय प्रमुखता का यह दूसरा पहलू है। इसलिए, आप वास्तव में आदम की संघीय प्रमुखता की सराहना नहीं करते हैं जब तक कि आप मसीह की संघीय प्रमुखता की सराहना नहीं करते हैं।
>
> — डॉ. वोडी बॉशम, जूनियर

इस तरह से सोचना अजीब लग सकता है, लेकिन यह वास्तव में परमेश्वर के लिए अनुग्रहकारिता थी कि वह आदम में मानवता को दण्ड दिए जाने की अनुमति दे। आदम के पास पाप से बचने के लिए जितना हमारे पास है उससे बहुत अधिक क्षमता थी। और उसने बहुत कम परीक्षा का सामना किया। वह ऐसे संसार में पैदा नहीं हुआ था जहाँ पाप भयंकर था। उसे कई अन्य लोगों से पापी प्रभावों के वश में नहीं किया गया था। इसके अलावा, उसने वास्तव में अदन की वाटिका में परमेश्वर के साथ चहल-कदमी और बातें की। इसमें कोई संदेह नहीं, कि परमेश्वर के बारे में उसका ज्ञान और अनुभव हमसे बहुत अधिक था।

पूरी रीति से पाप के बिना रचे जाने के कारण, वह अधिक व्यक्तिगत धार्मिकता भी रखता था। पाप का प्रतिरोध करने की व्यक्तिगत योग्यता जो आदम से ज्यादा थी, वह सिर्फ मसीह को छोड़ और किसी के पास कभी नहीं थी। यदि हमें उसी परीक्षा का सामना करना पड़ता जिसका आदम ने सामना किया था, तो हम और भी बुरी तरह से असफल होंगे। इसलिए, उसके द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाना वास्तव में एक महान लाभ दिया जाना था।

यह देखना आसान है कि परमेश्वर ने पाप का दोष हम पर प्रत्यक्ष रूप से लगाया क्योंकि हमारा प्रतिनिधित्व आदम द्वारा किया गया था। लेकिन जब उस प्रक्रिया के बारे में बात होती है जिसके द्वारा पाप व्यक्तियों को भ्रष्ट करता है और उन में वास करता है तो धर्मवैज्ञानी बहुत कुछ आपस में एक मत नहीं रखते। कुछ मानते हैं कि आदम में साझा किए गए दोष के लिए उचित न्यायिक सजा के रूप में परमेश्वर द्वारा हम पर पाप प्रत्यक्ष रूप से लगाया जाता है। दूसरों का मानना है कि पाप हमारे माता-पिता से विरासत में मिला है। उनका मानना है कि यह हम में उसी रीति से प्रजनन करता है जैसे हमारे शरीरों का निर्माण हमारे माता-पिता के पैटर्न के समान होता है। किसी भी मामले में, पाप हमारे गर्भधारण के क्षण से हर एक मनुष्य को भ्रष्ट करता है। भजन 58:3 कहता है कि दुष्ट लोग गर्भ से ही पापी होते हैं। और भजन 51:5 में, दाऊद ने बतशेबा के साथ अपने व्यभिचार पर यह स्वीकार करते हुए दुःख व्यक्त करता है कि वह उस समय से पापी था जब उसकी माता ने उसे गर्भ में धारण किया था। इसलिए, यहाँ तक कि गर्भ में मरने वाले बच्चों को भी मसीह के द्वारा बचाया जाना आवश्यक है। जैसा कि यीशु ने यूहन्ना 14:6 में कहा है:

> मार्ग सत्य और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता (यूहन्ना 14:6)।

यह तथ्य कि कोई पिता के पास यीशु के बिना नहीं पहुँच सकता दर्शाता है कि बिना किसी अपवाद के हर एक व्यक्ति को पाप से क्षमा और शुद्ध किए जाने की आवश्यकता है। हमारे पाप के कारण, हम सब संसार में आत्मिक मृत्यु की दशा में आते हैं, जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 2:1-3 में सिखाया। और जैसा कि रोमियों 7:14-25 में समझाया गया है, हम सब अपने अंदर वास कर रहे पाप और पापमय, भ्रष्ट स्वभाव के साथ संघर्ष करते हैं। इनमें से हर एक समस्या का जन्म अदन की वाटिका में आदम के पहले पाप में होता है। वह अपराध न केवल मानवजाति में पाप की उत्पत्ति थी, बल्कि हर एक मनुष्य में पाप की उत्पत्ति भी थी।

अब जबकि हमने मानव जाति और व्यक्तियों में पाप की उत्पत्ति पर विचार कर लिया है, आइए अपने ध्यान को मानव पाप के कर्तृत्व की ओर मोड़ते हैं।

कर्तृत्व

जब हम मानव पाप के कर्तृत्व की बात करते हैं, तो हमारे दिमाग में वह व्यक्ति होता है जो अंततः दोषी ठहराया जाना है। चित्रण के लिए, इस बात पर विचार कीजिए कि जब कोई बिलियर्ड्स जैसा खेल खेलता है तो क्या होता है। खिलाड़ी क्यू डंडे को आगे करता है, जो क्यू गेंद से टकराता है, जो दूसरी गेंद को टक्कर मारती है, जिससे वह दूसरी गेंद आगे बढ़ती है। हम किसी भी भाग के परिप्रेक्ष्य से विभिन्न भागों की गति का वर्णन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम कह सकते हैं कि क्यू डंडे के कारण गेंद आगे बढ़ी, और क्यू गेंद दूसरी गेंद के आगे बढ़ने का कारण बनी। लेकिन कोई भी यह नहीं कहेगा कि क्यू गेंद, या यहाँ तक कि क्यू डंडा भी, इन सभी गति का स्रोत था। जाहिर है, कि यह खिलाड़ी था जिसने पूरी प्रक्रिया की शुरुआत की, पहले क्यू डंडे को आगे बढ़ाने के निर्णय द्वारा, और फिर वास्तव में इसे आगे बढ़ाने के द्वारा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और कुछ ऐसा ही सच है जब लोग पाप करते हैं। बेशक, मानव पाप ज्यादा जटिल है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति में इच्छाशक्ति होती है और वह घटनाओं के नए पहलूओं को उत्पन्न कर या कर्ता हो सकता है। लेकिन, कहीं न कहीं, घटनाओं के लिए एक अंततः स्रोत फिर भी है।

कर्तृत्व का यह विचार महत्वपूर्ण है क्योंकि मसीही धर्म के कई विरोधियों ने परमेश्वर पर मानवता के पाप में पतन का कर्ता होने का आरोप लगाया है। अर्थात, उन्होंने मानवता के पाप के लिए परमेश्वर पर दोष लगाने की कोशिश की है। उनके पास सामान्यतः दो उद्देश्यों में से एक होता है। एक ओर, कुछ लोग तर्क देते हैं कि यदि परमेश्वर पापी है, तो वह परमेश्वर होने के लायक नहीं है, और निश्चित रूप से आराधना किए जाने के योग्य नहीं है। दूसरी ओर, कुछ लोगों ने कहा है कि यदि परमेश्वर पाप का अंततः स्रोत है, तो फिर मानवता पाप के लिए जिम्मेदार नहीं है, इसलिए हमें दण्डित करना अन्याय होगा। लेकिन पवित्र शास्त्र क्या कहता है?

आपको याद होगा कि जब आदम और हव्वा ने निषिद्ध फल को खाया, तो परमेश्वर ने सर्प और आदम और हव्वा को दण्डित किया। और उस दण्ड के दौरान, आदम और हव्वा दोनों ने किसी दूसरे पर दोष को स्थानांरित करने की कोशिश की। दोष को स्थानांरित करने की कोशिश करने में आदम पहला था। उत्पत्ति 3:12 में, आदम ने कहा:

> **जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है — उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैने खाया (उत्पत्ति 3:12)।**

आदम ने फल खाने से इनकार नहीं किया, लेकिन उसने जिम्मेदार होने से बचने का प्रयास किया। पहले, उसने अपनी पत्नी पर दोष लगाया, जिसने उसे फल खाने को दिया था। और दूसरा, उसने परमेश्वर को अप्रत्यक्ष रूप से दोषी ठहराया, क्योंकि परमेश्वर ने हव्वा को रचा था। उत्पत्ति 3:13 में, हव्वा ने यह कहते हुए सर्प पर दोष को स्थानांरित किया:

> **सर्प ने मुझे बहका दिया, तब मैं ने खाया (उत्पत्ति 3:13)।**

आदम और हव्वा दोनों ने यह तर्क देने की कोशिश की कि अंततः दोष, या उनके पाप के "कर्तृत्व" को किसी और पर डाल दिया जाना चाहिए। और ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने दण्डित होने से बचने की कोशिश करने के लिए ऐसा किया। लेकिन निश्चित रूप से, परमेश्वर उनके तर्क से सहमत नहीं था। उसने इस बात से इनकार नहीं किया कि वे दूसरों से प्रभावित हुए थे। लेकिन उसने इस बात से इनकार किया कि ये बाहरी प्रभाव उन्हें दण्डित नहीं करने के लिए पर्याप्त कारण थे। इसलिए, उन पदों में जो उसके बाद आते हैं, परमेश्वर ने स्त्री को बहकाने के लिए सर्प को दण्डित किया। उसने हव्वा को परमेश्वर के प्रति अविश्वास करने के लिए बहकावे में आने, फल खाने, और अपने पति को गुमराह करने के लिए दण्डित किया। और उसने आदम को हव्वा द्वारा गुमराह होने और फल खाने के लिए दण्डित किया। जहाँ तक परमेश्वर का संबंध था, आदम और हव्वा कम से कम इतने तो दोषी थे, क्योंकि उन्होंने उसकी आज्ञा का पालन न करने को चुना।

इस घटना में, हम कह सकते हैं कि पाप का अंततः कर्ता सर्प था, क्योंकि वह पहला ऐसा व्यक्तित्व था जिसमें पाप करने का विचार आया था, और पहला जन जिसकी कोशिश के कारण मानवता ने पाप किया। लेकिन आदम और हव्वा ने भी इस घटना के लिए स्वतंत्र चुनावों का योगदान दिया, और इस मायने में, मानव पाप के कर्ता थे।

लेकिन यह फिर भी हमारे लिए कुछ बहुत ही सामान्य प्रश्नों को छोड़ता है, जैसे: सर्प ने पाप क्यों किया? पाप करने वाला पहला, सोचने वाला प्राणी कौन था? उस प्राणी ने पाप क्यों किया? और, क्या परमेश्वर, अंततः अपने प्राणियों के पाप के लिए जिम्मेदार है? पवित्र शास्त्र इन सभी प्रश्नों का उत्तर पूरी

तरह से नहीं देता है। लेकिन यह हमें सबसे महत्वपूर्ण पहलूओं का उत्तर देने के लिए पर्याप्त जानकारी जरूर प्रदान करता है।

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, पवित्र शास्त्र जोर देकर कहता है कि परमेश्वर पाप का दोषी नहीं है, या वह किसी को पाप करने के लिए मजबूर नहीं करता है। वास्तव में, परमेश्वर स्वयं अच्छाई का आदर्श मानक है। इसलिए, परिभाषा के द्वारा, वह किसी भी चीज़ के लिए दोषी नहीं हो सकता। 1 यूहन्ना 1:5 में यूहन्ना ने जो लिखा उसे सुनिए:

> परमेश्वर ज्योति है; और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं (1 यूहन्ना 1:5)।

इस पत्री में, यूहन्ना नैतिक पवित्रता का संदर्भ देने के लिए "ज्योति" का; और पाप और उसके प्रभावों का संदर्भ देने लिए "अन्धकार" का इस्तेमाल बार बार करता है। और बात स्पष्ट है: परमेश्वर पूरी तरह से पाप से मुक्त है।

परमेश्वर स्वयं अच्छे और बुरे का परम मानक है। उससे बाहर कोई परम नैतिक मानक नहीं है जो उसका न्याय कर सके। इसके अलावा, व्यवस्थाविवरण 25:16, भजन 5:4, और जकर्याह 8:17 जैसे पदों में पवित्र शास्त्र बताता है कि परमेश्वर पाप में घृणा करता है। और याकूब 1:13 कहता है कि पाप से उसकी परीक्षा नहीं की जा सकती है।

लेकिन क्योंकि परमेश्वर पाप से मुक्त है, और परमेश्वर पाप से घृणा करता है, और निश्चित रूप से परमेश्वर पाप को रोकने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है, तो फिर पाप कैसे हो गया? एक पाप-रहित, सर्व-शक्तिशाली सृष्टिकर्ता ऐसी सृष्टि को कैसे डिजाइन कर सकता है जो पाप को जन्म दे? अधिकांश धर्मवैज्ञानियों ने इस प्रश्न का उत्तर परमेश्वर के प्राणियों की इच्छा की स्वतंत्रता के संदर्भ में दिया है।

> यदि किसी ने ईश्वरीय-ज्ञान, बाइबल, मसीही विश्वास के बारे में कुछ समय के लिए सोचा होगा, तो जल्द ही यह प्रश्न उनके दिमाग में आयेगा, "तो, परमेश्वर पाप का कर्ता क्यों नहीं है?" और मैं सोचता हूँ कि हमें स्वीकार करना होगा और, वास्तव में, पुष्टि करनी होगी कि जो कुछ हो रहा है वह एक भव्य योजना का हिस्सा है। और इसलिए, परमेश्वर अनंत काल से वह है जिसने उन सब बातों की योजना बनाई जिसे हम देखते हैं, और उसका एक भव्य उद्देश्य भी है। इसलिए अंनत भूतकाल से, अनंत भविष्य की योजना एक शानदार उद्देश्य को पूरा कर करने जा रही है...लेकिन हम यह नहीं कहते हैं कि परमेश्वर पाप का कर्ता है क्योंकि परमेश्वर पाप का क्रियाशील कारण नहीं है, और उससे मेरा मतलब है कि वह "कार्य का कर्ता" नहीं है। हम अनुमति की अवधारणा पर बहुत बात करते हैं, कि परमेश्वर ने नैतिक रूप से जिम्मेदार प्राणियों को रचा है और उसने उन्हें सही और गलत का चुनाव करने की योग्यता दी है। और जब अच्छा काम होता है, यह परमेश्वर के अनुग्रह से होता है, और हम यह कहने की जल्दबाजी करते हैं कि परमेश्वर ने अच्छा ठहराया है। जब बुरा होता है, हम कहते हैं कि यह परमेश्वर की अनुमेय इच्छा के तहत है, कि परमेश्वर ने इसकी अनुमति दी है। यह वाटिका से लेकर उस दिन तक सत्य है जब शैतान यीशु के चरणों पर झूकेगा और उसे प्रभु घोषित करेगा।
>
> — डॉ. केन कीथले

विभिन्न ईश्वरीय-ज्ञान की परंपराएं अलग-अलग तरीकों से स्वतंत्र इच्छा को समझते हैं। लेकिन सुसमाचारीय लोग घटनाओं और कारणों के निम्नलिखित क्रम से सहमत होते हैं। सबसे पहले, परमेश्वर ने

स्वर्गदूतों को बनाया और उन्हें इच्छा की पर्याप्त स्वतंत्रता के साथ संपन्न किया कि वे पाप करने और पाप करने से बचने के बीच चुनाव करने में सक्षम थे। जब स्वर्गदूतों ने पाप करने को चुना, तो वे परमेश्वर के अनुग्रह से गिर गए और दुष्टात्मा के रूप में पहचाने जाने लगे। यहूदा 6 इसके लिए संदर्भ देता है जब वह कहता है:

> फिर जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा वरन् अपने निज निवास को छोड़ दिया — [परमेश्वर] ने उनको भी उस भीषण दिन के न्याय के लिए अन्धकार में, जो सदाकाल के लिए है, बन्धनों में रखा है (यहूदा 6)।

दूसरा पतरस 2:4 इन गिरे हुए स्वर्गदूतों का वर्णन करने के लिए इसी भाषा का इस्तेमाल करता है।

स्वर्गदूतों के गिरने के बाद, परमेश्वर ने मानवता की सृष्टि की और उन्हें अदन की वाटिका में रखा। स्वर्गदूतों के समान, मनुष्यों को दोनों पाप करने और पाप न करने की पर्याप्त स्वतंत्र इच्छा के साथ बनाया गया था।

हिप्पो के बिशप, अगस्तीन, जो कि सन् 354 से 430 तक रहे थे, इसका वर्णन *पोसे नॉन पेकारे* की दशा के रूप में करते हैं। इस लातिनी वाक्यांश का शाब्दिक अनुवाद "पाप न करने में सक्षम होने" के रूप में किया जा सकता है। हालांकि, इसके ईश्वरीय-ज्ञान वाले उपयोग में, इस वाक्यांश को ज्यादा सामान्य रूप से "पाप न करने की योग्यता" के रूप में अनुवादित किया जाता है। अगस्तीन के अनुसार, आदम और हव्वा को पाप से पूरी तरह से बचने के लिए सशक्त किया गया था। लेकिन उनमें पाप करने की क्षमता भी थी।

अदन की वाटिका में मानवता को रखने के बाद, शैतान ने, जो सबसे प्रमुख पाप में पतित स्वर्गदूत था, एक सर्प का रूप धारण किया। और इस रूप में, उसने हव्वा को भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से निषिद्ध फल खाने के लिए बहकाया। हालांकि उत्पत्ति शैतान के साथ सर्प की पहचान नहीं करता है, प्रकाशितवाक्य 12:9 और 20:2 दोनों शैतान को "प्राचीन सर्प" कहते हैं। और मत्ती 4:6 में, यीशु को बहकाने की कोशिश करने के लिए शैतान ने उन्हीं रणनीतियों का इस्तेमाल किया जिनका इस्तेमाल सर्प ने हव्वा को बहकाने के लिए वाटिका में किया था। दोनों ही मामलों में, परमेश्वर के वचनों का उद्धरण देने और फिर गलत रीति से लागू करने की रणनीति थी। इन जैसे कारणों के लिए, ज्यादातर सुसमाचारीय धर्मवैज्ञानियों ने अदन की वाटिका में सर्प के साथ शैतान की बराबरी की है।

कुछ भी हो, उत्पत्ति 3:6 रिकॉर्ड करता है कि हव्वा और आदम दोनों ने निषिद्ध फल खाया। वे परमेश्वर की आज्ञा को जानते थे और उन्होंने स्वतंत्र रूप से उसकी अवज्ञा करने का चुनाव किया। वहाँ किसी भी आंतरिक या बाहरी शक्ति से कोई मजबूरी नहीं थी। उनके दिमाग और चुनाव उनके अपने थे। इस तरह से, मानवता अपने पाप के लिए दोषी था, और न कि परमेश्वर। अब, हम फिर भी पूछ सकते हैं कि क्यों परमेश्वर ने *मानवता को पाप करने* की अनुमित दी। इसने किस उद्देश्य को हासिल किया?

> मसीही लोगों के सदाबहार प्रश्नों में से एक, और ठीक भी है, वह है, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को पाप करने की अनुमति क्यों दी? हमारे लिए यह सोच से बाहर है कि असीम रूप से शक्तिशाली परमेश्वर, एक मायने में, मृत्यु और पीड़ा और मानव दुःख की इन शताब्दियों, सहस्राब्दियां के इन सभी भयावह परिणामों को पहले ही नहीं रोक पाया, जबकि वह जानता था कि आगे क्या है। परमेश्वर ने इसकी अनुमति क्यों दी? ख़ैर, हम नहीं जानते। और हमारे लिए यह सामान्य बात है कि हम अपने न्यायाधीश का न्याय करने के लिए खड़े हों और उसके व्यवहार के बारे में कठिन नैतिक प्रश्नों को पूछें, लेकिन मैं सोचता हूँ कि अंत में विश्वास कहता है, परमेश्वर अपने असीम ज्ञान और भलाई में निहित गणना से कार्य कर रहा होगा। और उसने देखा होगा कि भले ही यह मानव स्वतंत्रता और गरिमा का वैसा

> उपयोग नहीं है जैसा उसने इरादा किया था, फिर भी इस भव्य मानव प्रयोग से, शुरुआत में ही रद्द करने की तुलना में इससे भी अधिक अच्छा परिणाम आ सकता है। और मैं सोचता हूँ, शायद, अंत में, हम इस प्रश्न का जवाब तब तक नहीं देखेंगे जब तक कि हम बुराई पर भव्यशाली विजय पर कृतज्ञता और विस्मय के साथ पीछे देखने में सक्षम नहीं होंगे, वह शोभमान भलाई जिसे परमेश्वर अंत में इसके प्रतिभागियों के दुखद विद्रोह के बावजूद, इस मानव प्रयोग के द्वारा हासिल करेगा। हमारे पास अभी तक कोई स्पष्ट विचार नहीं है कि परमेश्वर की शानदार विजय कितनी महान होने जा रही है।
>
> — डॉ. ग्लेन जी. स्कॉर्जी

हमारे लिए परमेश्वर के उद्देश्य सदैव स्पष्ट नहीं होते हैं। और संसार में पाप की अनुमति देने के उसके कारण कुछ रहस्यमय हो सकते हैं। यह सच है कि अगर परमेश्वर ने हमें पाप से दूर रखा होता तो इतिहास ने एक बहुत ही अलग मार्ग लिया होता। लेकिन यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने इसके बजाय हमारे लिए इस मार्ग को चुना है। जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 1:11 में लिखा:

> उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर... (इफिसियों 1:11)।

जो घटित होता है उसमें ऐसा कुछ भी नहीं जो परमेश्वर की योजना या नियंत्रण से बाहर हो। इसलिए, उसके पास निश्चित रूप से मानव पाप की अनुमति देने का कोई कारण था। कम से कम, हम पुष्टि कर सकते हैं कि हमारा पाप उसे अपने कई गुणों को व्यक्त करने का अवसर देता है जो कि हमसे छिपे रहते यदि हमने कभी पाप नहीं किया होता। उदाहरण के लिए, वह कभी-कभी मानवीय पाप के जवाब में दया और सहनशीलता व्यक्त करता है, और अन्य समयों पर क्रोध व्यक्त करता है। इन गुणों की अभिव्यक्ति के माध्यम से परमेश्वर को जाना जाता और महिमा दी जाती है। इसलिए, एक ऐसा अभिप्राय है जिसमें हमारे पाप के साथ निपटारा करने के द्वारा वह महिमा पाता है। हम इस बात की पुष्टि भी कर सकते हैं कि, आखिकार, पाप विश्वासियों के लाभ के लिए काम करता है, जिसमें वह हमें आशीषित करने के लिए इसे अपनी योजना का एक उपयोगी हिस्सा बनाता है। जैसा कि हम रोमियों 8:28 में पढ़ते हैं:

> जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है, अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं (रोमियों 8:28)।

परमेश्वर जो करता है वह सही और भला है। उसमें पाप का कोई नाममात्र भी नहीं है। इसलिए, हमें कभी भी यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि मानव पाप उसकी पवित्रता की राह में किसी भी तरह से बाधक है। इसके विपरीत, मानव पाप परमेश्वर को अपनी महिमा प्रकट करने के लिए, क्षमा के द्वारा दया और करूणा व्यक्त करने के लिए, और दण्ड के द्वारा अपना न्याय और क्रोध व्यक्त करने के लिए एक अवसर प्रदान करता है। और ये सभी बातें उसकी परम पवित्रता और भलाई को दर्शाती एवं उसमें योगदान करती हैं। इसलिए जब हम मानव जाति और मनुष्यों में पाप की उत्पत्ति के बारे में विचार करते हैं, तो हमें याद रखने की आवश्यकता है कि दोष पूरी तरह से मानव के कंधों पर है।

अब जबकि हमने मानव पाप की उत्पत्ति के संदर्भ में पाप के अभिशाप का पता लगा लिया है, तो आइए पाप के आवश्यक चरित्र पर विचार करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

चरित्र

पवित्र शास्त्र में पाप की पहचान करने का सबसे आसान और सटिक तरीका उन बातों के उदाहरणों की तलाश करना है जिन्हें परमेश्वर निषिद्ध करता, निंदा करता या शापित करता है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम देखते हैं कि बाइबल पाप का उल्लेख करने के लिए कई प्रकार की शब्दावली का उपयोग करता है। यह नियमित रूप से पाप को अन्याय, अपराध, लापरवाही, लक्ष्य तक नहीं पहुँचना, भटकना, हठधमिर्ता, अभिमान, बेईमानी, चोट करना, विद्रोह, अपवित्रता, विश्वासघात, अनिष्ठा, उतावलापन, अशिष्टता, वासना के संदर्भ में वर्णित करता है — सूची, और फिर प्रत्येक शब्द पर हमारी चर्चा भी और लंबी जा सकती है। इसलिए, पाप को पहचानने के लिए पवित्र शास्त्र के प्रत्येक शब्द के अर्थ का पता लगाने की कोशिश करने के बजाय, हम अपना ध्यान पाप की सामान्य विशेषताओं पर केंद्रित करेंगे।

हम पाप के चरित्र का दो भागों में वर्णन करेंगे। सबसे पहले, हम देखेंगे कि पाप मौलिक रूप से व्यवस्था का विरोध है। और दूसरा, हम देखेंगे कि यह प्रेम न करना है। आइए सबसे पहले इस विचार पर ध्यान दें कि पाप व्यवस्था विरोधी है।

व्यवस्था विरोधी

आज मसीही लोगों के लिए यह सोचना आम बात है कि परमेश्वर की व्यवस्था हमारे लिए अनावश्यक या यहाँ तक कि हानिकारक है। आमतौर पर, यह इसलिए है क्योंकि वे उद्धार में व्यवस्था की भूमिका के बारे में पौलुस की शिक्षा को गलत समझते हैं। बेशक, यह सत्य है कि व्यवस्था हमें बचा नहीं सकता। यह हमें केवल दोषी ठहरा सकता है। इसलिए गलातियों 5:4 में, पौलुस ने लिखा:

> तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो (गलातियों 5:4)।

लेकिन ठीक यही कारण है कि क्यों व्यवस्था हमें पाप की पहचान करने और चिन्हित करने में मदद देने हेतु बहुत उपयोगी है। हमें दोषी ठहराने की व्यवस्था की शक्ति हमारी पापमयता की पहचान करने की इसकी क्षमता में निहित है। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 5:20 में लिखा:

> व्यवस्था बीच में आ गई, कि अपराध बहुत हो. परन्तु जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ (रोमन 5:20)।

व्यवस्था पाप को विभिन्न तरीकों में बढ़ाती है। उदाहरण के लिए, यह हमारे ऊपर उन दायित्वों को डालती है जो व्यवस्था के समक्ष आवश्यक नहीं थे। और जो यह निषिद्ध करता है उस पर ध्यान आकर्षित करने के द्वारा यह हमारे पापी अभिलाषा को जगाता है। फिर भी, व्यवस्था अभी भी अच्छा है। यह अभी भी परमेश्वर के चरित्र का एक सच्चा प्रतिबिंब, और एक मानक है जिससे पाप को मापा जाता है। जैसा कि पौलुस आगे रोमियों 7:12 में लिखता है:

> व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी पवित्र, धर्मी और अच्छी है (रोमियों 7:12)।

> लोग अकसर गलत तरीके से सोचते हैं कि परमेश्वर की पूरी व्यवस्था बाधा डालने के लिए, मनुष्य के जीवन में बाधा डालने के लिए दी गई थी। वास्तव में, यह उस तरह से नहीं है। परमेश्वर की व्यवस्था मानव जाति को इसलिए दी गई थी ताकि मानव जाति [जान जाये कि कैसे] सही तरीके से ... जीना है। लेकिन क्योंकि मनुष्य पाप के सामने असमर्थ हैं, [व्यवस्था] कुछ ऐसी चीज़ बन जाती है

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> जिसे पापी मानव जाति द्वारा गलत रीति से समझा जाता है। लेकिन जब कोई व्यक्ति परमेश्वर को जान जाता है, तो वह स्पष्टता से यह जान लेगा कि परमेश्वर की व्यवस्था उस व्यक्ति के लिए ऐसा जीवन प्राप्त करने के लिए दी गई थी जो अच्छा हो, जो परमेश्वर में परिपूर्ण हो। इसलिए इसके साथ, वास्तव में, एक विश्वासी को परमेश्वर की व्यवस्था के लिए सकारात्मक तरीके से, कृतज्ञता के साथ जवाब देना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर की व्यवस्था उसकी रक्षा करता है, उसका संरक्षण करता है, उसका मार्गदर्शन करता है। और परमेश्वर की व्यवस्था, परमेश्वर के वचन के अनुसार, कुछ ऐसी है जो अपने आप में परिपूर्ण है।
>
> — रेव्ह. एगस. जी. सत्यापुत्रा, अनुवादित

पाप का व्यवस्था विरोधी चरित्र अदन की वाटिका में मानवता के पाप वाले पतन में एकदम स्पष्ट है। आदम और हव्वा ने परमेश्वर से एक ही स्पष्ट निषेध को प्राप्त किया। और उन्होंने सीधे उस व्यवस्था को तोड़कर पाप किया। और तब से हर एक पाप ने उस व्यवस्था के विरोध को प्रतिबिंबित किया है।

मानवता के साथ परमेश्वर के वाचा वाले संबंध के संदर्भ में, पाप के व्यवस्था वाले विरोध के बारे में सोचें। हमने उल्लेख किया था कि परमेश्वर की वाचा हमारे प्रति उसकी परोपकारिता को प्रदर्शित करती है, हम से वफादारी की माँग करती है, और हमारी वफादारी और बेईमानी के लिए परिणामों को प्रदान करती है। ठीक है, *व्यवस्था* वह है जो उस वफादारी का वर्णन करता है जिसे परमेश्वर हम से चाहता है। हर एक बात जिसका वह अनुमोदन और आशीषित करता है वह उसकी वाचा वाली व्यवस्था में एक शर्त है — चाहे वह पवित्र शास्त्र में स्पष्ट रूप से आदेशित हो या नहीं। और हर एक बात जिसको वह दोषी ठहराता और शापित करता है, वह उसकी वाचा वाली व्यवस्था में एक निषेध है — चाहे वह पवित्र शास्त्र में स्पष्ट रूप से मना किया गया हो या नहीं। और इसलिए, हम जो कुछ भी करते हैं वह या तो परमेश्वर की वाचा के आज्ञापालन में है या उसकी व्यवस्था के उल्लंघन में है। हमारे मनों का हर एक उद्देश्य या तो परमेश्वर की महिमा और प्रसन्नता चाहता है, या हमारी अपनी संतुष्टि चाहता है। हर एक विचार जिसे हम सोचते हैं, हर एक कार्य जो हम करते हैं, हर एक भावना जिसे हम महसूस करते हैं, वह या तो परमेश्वर की वाचा वाले राज्य के निर्माण की ओर एक कदम है या उसके राजा के खिलाफ़ विद्रोह की ओर एक कदम है। यह वह बात है जिसने प्रेरित यूहन्ना को 1 यूहन्ना 3: 2-4 में लिखने के लिए प्रेरित किया:

> हम परमेश्वर की संतान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे। इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है। जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था को विरोध करता है, और पाप तो व्यवस्था का विरोध है **(1 यूहन्ना 3:2-4)**।

इस अनुच्छेद में, यूहन्ना ने यीशु के जैसी पूर्ण पवित्रता के साथ व्यवस्था के तोड़ने की तुलना की है। वे ही केवल दो विकल्प थे जिन्हें उसने देखा। या तो हम पाप रहित हैं या हम व्यवस्था के विरोधी हैं।

यूहन्ना का मानना था कि पवित्र शास्त्र में व्यवस्था "यह करो" और "यह न करो" की कुछ संख्या तक सीमित नहीं है। इसके विपरीत, यह परमेश्वर के सिद्ध चरित्र को सारांशित करता है। यह चरित्र अपने आप में ही व्यवस्था की परम परिपूर्णता है, जबकि पवित्र शास्त्र में लिखित व्यवस्था केवल इसका वर्णन करती है। और इसलिए, कुछ भी जो परमेश्वर के पवित्र स्वभाव के विपरीत है उसकी व्यवस्था का उल्लंघन है। याकूब 2:10-11 में याकूब ने इसे कैसे लिखा उसे सुनिए:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहर चुका है। इसलिए कि जिसने यह कहा, "तू व्यभिचार न करना उसी ने यह भी कहा, कि "तू हत्या न करना" (याकूब 2:10-11)।

याकूब की बात, यूहन्ना की बात के जैसी ही थी: पवित्र शास्त्र का हर एक नियम एक ही परमेश्वर से आता है और परमेश्वर को पूरी रीति से प्रसन्न करने की हम से माँग करता।

हमारे व्यवहार के लिए परमेश्वर स्वयं परम मानक है, और व्यवस्था हमारे लिए उस मानक को प्रकट करती है। व्यवस्था का अभिप्राय परमेश्वर को पूरी तरह से प्रकट करने का नहीं है। आखिरकार, परमेश्वर अनंत, समझ से बाहर है — कोई भी शब्द कभी भी उसका पूरी तरह से वर्णन नहीं कर सकता। इसके बजाय, व्यवस्था केवल उसके चरित्र को सारांशित करती है। उसी के अनुरूप, हमारा दायित्व केवल यह नहीं है कि वह करें जिसे व्यवस्था स्पष्ट रूप से कहता है। यह व्यवस्था द्वारा वर्णित परमेश्वर के सिद्ध चरित्र के अनुरूप स्वयं को बनाना है। और जहाँ कहीं भी हम में कमी पाई जाती है, हमारे पाप को व्यवस्था विरोधी के रूप में ठीक ही वर्णित किया जाता है।

यह देखने के बाद कि पाप का चरित्र व्यवस्था का विरोध है, आइए इस विचार का भी पता लगाएं कि यह प्रेम न करना भी है।

प्रेम न करना

जब आदम और हव्वा ने पहली बार परमेश्वर के खिलाफ़ पाप किया, तो उन्होंने परमेश्वर और एक दूसरे के लिए प्रेम की बहुत ज्यादा कमी को दिखाया। और यही बात तब सत्य है जब हम पाप करते हैं। हमारा पाप परमेश्वर को और दूसरे मनुष्यों को प्रेम न करना है।

अब यह समझने के लिए कि प्रेम न करने का क्या अर्थ है, हमें यह समझाकर शुरुआत करनी चाहिए कि प्रेम करने का क्या अर्थ है। प्रेम की कई अलग-अलग अवधारणाएँ हैं। पवित्र शास्त्र पति और पत्नी के बीच प्रेम, परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम, दोस्तों के बीच प्रेम, न्याय और आदर्शों के लिए प्रेम और यहाँ तक कि खाने के लिए प्रेम की बात करता है। लेकिन जब यह परमेश्वर और मानवता से प्रेम करने के संदर्भ में बात करता है, तो ऐसा लगता है कि इसके मन में कुछ और बात है। यह हमारे वाचा वाले दायित्वों के प्रति वफादारी वाला प्रेम है, और वाचा के खातिर दूसरे लोगों के प्रति दया वाला प्रेम है। यूहन्ना 14:15 में अपने चेलों के लिए यीशु के वचनों पर ध्यान करें:

> यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे (यूहन्ना 14:15)।

प्रेम को सही रीति से केवल आज्ञाकारिता के रूप में व्यक्त किया जाता है, जब हम जिसे प्यार करते हैं वह हमारे ऊपर अधिकार रखता हो। क्या आप ऐसे बच्चे की कल्पना कर सकते हैं जो अपने माता-पिता से कह रहा हो, "यदि आप मुझसे प्रेम करते हैं, तो आप मेरी आज्ञा मानोगे"? या क्या आप अपने किसी दोस्त से यह कहने की कल्पना कर सकते हैं? बेशक नहीं। दोस्त अपने दोस्त को अपनी आज्ञा मानने के लिए आदेश नहीं दे सकता। और माता-पिता के ऊपर बच्चों का अधिकार नहीं होता। लेकिन यीशु अपने चेलों को एक बच्चे या एक दोस्त के रूप में उससे प्रेम करने की चुनौति नहीं दे रहा था। वह उन्हें उनके वाचा वाले राजा के रूप में उससे प्रेम करने के लिए चुनौति दे रहा था। यूहन्ना ने इसी विचार को 1 यूहन्ना 5:3 में समझा जहाँ उसने लिखा:

> परमेश्वर से प्रेम रखना यह है: कि हम उस की आज्ञाओं को मानें (1 यूहन्ना 5:3)

और व्यवस्थाविवरण 6:5-6 में परमेश्वर ने प्रेम और वाचा वाली वफादारी को इस तरीके से जोड़ा:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें (व्यवस्थाविवरण 6:5-6)।

इन दोनों अनुच्छेदों में, हम सीखते हैं कि उस की आज्ञाओं के लिए दिल से आज्ञापालन प्रेम की वह मौलिक अभिव्यक्ति है जिसे परमेश्वर चाहता है।

> मैं मानता हूँ कि परमेश्वर के लिए प्रेम परमेश्वर के प्रति आज्ञापालन को प्रोत्साहित करती है क्योंकि यदि वह मुझसे प्रेम करता है और मैं भी उससे प्रेम करूँ, और मैं उस कीमत को भी जानता हूँ जो उसने मेरी ओर से अदा की है, तो मैं उसके लिए सब कुछ भी करूँगा। कुछ मनुष्यों के साथ मेरा यही संबंध है। एकदम परमेश्वर के जैसा तो नहीं, लेकिन मेरी पत्नी के साथ। जो कुछ वह चाहती है कि मैं करूँ मैं उसके लिए वह सब कुछ भी करूँगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह मुझसे प्रेम करती है। मैं भी उससे प्रेम करता हूँ, लेकिन मैं उस कीमत को जानता हूँ जो उसने हमारी शादी में अदा की है, मुझे खुश रखने के लिए, मुझे पवित्र बनाने के लिए, और वह सब कुछ बनाने के लिए जो परमेश्वर मुझे चाहता है। और इसलिए, यह पहचानते हुए कि, मेरे पास ऐसा पुरुष बनने के लिए जबरदस्त प्रेरणा है जैसा मुझे उसके लिए होना चाहिए। और सत्य यह है, मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर-मनुष्य वाले संबंध के साथ यही बात ठीक उसी तरह से कार्य करती है। उस प्रेम और उस कीमत के बारे में पता चलने पर हम कुछ भी करेंगे।
>
> — डॉ. मैट फ्रायडमैन

परमेश्वर नहीं चाहता था कि उसके लोग उसकी आज्ञापालन सिर्फ इसलिए करें क्योंकि वे उससे डरते थे, या सिर्फ इसलिए कि वे पुरस्कार पाना चाहते थे। इसके बजाय, वह चाहता था कि वे उसकी आ्ज्ञापालन इसलिए करें, क्योंकि वे सचमुच उसका सम्मान करते थे, क्योंकि वे उसके परोपकार के लिए आभारी थे, क्योंकि वे उसकी वाचा के लिए वफादार थे, और क्योंकि उन्होंने उसको और उसकी व्यवस्था को अपने मनों में रखा था। यही कारण है कि पवित्र शास्त्र अकसर परमेश्वर की वाचा को प्रेम के संदर्भ में बतलाता है। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 7:9-13 से इन वचनों को सुनिए:

> वह विश्वासयोग्य परमेश्वर है, जो उससे प्रेम रखते और उसकी आज्ञाएँ मानते हैं उनके साथ वह हजार पीढ़ी तक अपनी वाचा का पालन करता है...और तुम जो इन नियमों को सुनकर मानोगे और इन पर चलोगे, तो तेरा परमेश्वर यहोवा भी उस करुणामय वाचा का पालन करेगा जिसे उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बाँधी थी। वह तुझ से प्रेम रखेगा, और तुझे आशीष देगा, और गिनती में बढ़ाएगा (व्यवस्थाविवरण 7:9-13)।

इस अनुच्छेद में, परमेश्वर का अपने लोगों के प्रति प्रेम, और उसके प्रति उसके लोगों का प्रेम दोनों का वाचा वाली विश्वासयोग्यता के संदर्भ में वर्णन किया गया है।

जब यीशु ने मत्ती 22:34-40, और मरकुस 12:28-31 में व्यवस्था की सबसे बड़ी आज्ञा के बारे में बात की थी तो उसके ध्यान यही वो बात थी। उन अनुच्छेदों में, यीशु एक फरीसी के साथ चर्चा कर रहा था जो व्यवस्था का विशेषज्ञ था। और फरीसी ने यीशु की समझ को परखने के लिए एक प्रश्न को तैयार किया कि व्यवस्था की आज्ञाएं एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं। विशेष रूप से, उसने यीशु से सबसे महान

या सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा को बतलाने के लिए कहा। और यीशु ने व्यवस्थाविवरण 6:5, 6 और लैव्यवस्था 19:18 के हवाले से जवाब दिया। मत्ती 22:37-40 में यीशु ने जो कहा उसे सुनिए:

> तू अपने परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन, और अपने सारे प्राण, और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है: "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं (मत्ती 22:37-40)।

सबसे पहले, अनुस्मारक के रूप में, ध्यान दें कि यीशु ने इन आज्ञाओं को व्यापक सारांश के रूप में पहचाना जिसका उद्देश्य परमेश्वर की व्यवस्था के पूर्ण चरित्र को प्रतिबिंबित करना था। दूसरा, ध्यान दें कि इन दोनों आज्ञाओं को प्रेम के संदर्भ में व्यक्त किया गया था: परमेश्वर के लिए प्रेम, और पड़ोसी के लिए प्रेम।

पौलुस ने रोमियों 13:9 और गलातियों 5:14 में इसी तरह के बयान दिए, जहाँ उसने कहा कि पूरी व्यवस्था को पड़ोसी के लिए प्रेम के संदर्भ में सारांशित किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के लिए प्रेम और पड़ोसी के लिए प्रेम व्यवस्था के दो भागों से बढ़कर कर हैं। इसके बजाय, इनमें से प्रत्येक आज्ञा पूरी व्यवस्था को सारांशित करती है। परमेश्वर के लिए प्रेम पूरी व्यवस्था का पहला सार है, और पड़ोसी के लिए प्रेम पूरी व्यवस्था का दूसरा सार है।

इसलिए, इनके अनुसार पाप मौलिक रूप से परमेश्वर और पड़ोसी दोनों के प्रति प्रेम न करना है। कम से कम, हर एक पाप परमेश्वर के प्रति प्रेम न करना है क्योंकि यह दिखाता है कि वह हमारे मनों में सबसे पहली प्रतिबद्धता नहीं है। हर एक पाप उसके चरित्र का तिरस्कार, उसके अधिकार के ख़िलाफ विद्रोह, और उसकी वाचा का उल्लंघन है। और हर एक पाप हमारे पड़ोसी के प्रति प्रेम न करना है। यह हमारे पड़ोसी में, जो परमेश्वर का स्वरूप है, परमेश्वर के चरित्र और अधिकार के प्रतिबिंब को तिरस्कृत करता है। और यह परमेश्वर की वाचा की आशीषों के माध्यम से हमारे पड़ोसी की भलाई करने में विफल रहता है।

> मैं अपने छात्रों को सिखाता हूँ कि वे तब तक स्नातक की परीक्षा पास नहीं कर सकते जब तक वे "ईश्वरीय-ज्ञान 101" को पास नहीं करते, और फिर मैं उन्हें बताता हूँ कि ईश्वरीय-ज्ञान 101 केवल एक कथन है: परमेश्वर, परमेश्वर है और आप परमेश्वर नहीं हैं। पाप कहता है, "मैं परमेश्वर हूँ।" पाप परमेश्वर को, परमेश्वर की महिमा को, परमेश्वर के सम्मान को, परमेश्वर की इच्छा को, परमेश्वर के राज्य को हाशिए पर डाल देता है, और हमारी महिमा, हमारे सम्मान, हमारी इच्छा, हमारे राज्य को केंद्रीकृत करता है। और इसलिए, ईश्वरीय-ज्ञान 101 के बाद, मेरे पास ईश्वरीय-ज्ञान 102 है: क्योंकि परमेश्वर, परमेश्वर है, आपको प्रभु अपने परमेश्वर को अपने सारे मन, प्राण, बुद्धि और शक्ति से प्रेम करना है, और क्योंकि आप परमेश्वर नहीं हैं, संसार आपके चारों ओर नहीं घूमती है। आपको अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना है। और इसलिए, हाँ, पाप मौलिक रूप से दूसरों को प्रेम न करना है। यह स्वयं को प्रेम करना है; यह स्वयं को केंद्रीकृत करना है। और इसलिए, परमेश्वर के प्रति आदर्श आज्ञापालन — यानी, पाप न करना है कि — प्रेम करना। यह परमेश्वर से प्रेम करना है और यह दूसरों से प्रेम करना है।
>
> — डॉ. ऐलन हल्टबर्ग

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मानवता के पाप में पतन के संदर्भ में पाप के प्रेम न करने वाले चरित्र के बारे में विचार करें। सर्प ने हव्वा को यह बताकर बहकाया कि निषिद्ध फल के बारे में परमेश्वर झूठ बोल रहा था। उसने कहा कि यदि वह इसे खा लेती है, तो न केवल वह नहीं मरेगी, बल्कि वह परमेश्वर के समान बन जाएगी। जब उसने उसे खा लिया था, तो आदम भी उसी झूठ के लिए स्पष्ट रीति से आश्वस्त था, इसलिए उसने भी कुछ खा लिया।

अब, आदम और हव्वा परमेश्वर और पड़ोसी के प्रति प्रेम न करने वाले कैसे हुए? वे परमेश्वर की वाचा वाली व्यवस्था के ख़िलाफ विद्रोह, और परमेश्वर की सच्चाई से ज्यादा सर्प के झूठ पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर के प्रति प्रेम न करने वाले हुए। आदम को पाप के लिए बहकाने, उसमें परमेश्वर के स्वरूप के साथ असंतुष्ट होने, और परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आज्ञापालन के माध्यम से उसका भला खोजने में विफल रहने के द्वारा हव्वा ने आदम को प्रेम नहीं किया। इसी रीति से, जब हव्वा को बहकाया गया था तो उसकी समझ को सही करने में विफल रहने, उस में और अपने में परमेश्वर के स्वरूप के साथ उसकी असंतुष्टि की पुष्टि करने, और ऐसा पाप करने के द्वारा जिसका उसके लिए नकारात्मक नतीजे थे, आदम ने हव्वा को प्रेम नहीं किया।

और कुछ-कुछ ऐसा ही सभी मानव पापों के लिए सच है। आदम और हव्वा के पहले पाप के जैसे ही, हर एक मानव पाप परमेश्वर की सच्चाई का तिरस्कार करने, उसके परोपकार पर अविश्वास करने, और उसके अधिकार के ख़िलाफ विद्रोह करने के द्वारा परमेश्वर का यही दृष्टिकोण अपनाता है। संक्षेप में, मानव का प्रत्येक पाप परमेश्वर के लिए वाचा वाला उचित प्रेम दिखाने में विफल रहता है। और मानव का प्रत्येक पाप हमारे पड़ोसियों के लिए भी वाचा वाला उचित प्रेम दिखाने में विफल रहता है। चाहे हम उनके ख़िलाफ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में पाप करते हैं, और चाहे हम अपने कार्यों से या निष्क्रियता से पाप करें, हमारे पाप सदैव दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं। यह उनमें परमेश्वर के स्वरूप का निरादर करता है। यह उनकी भलाई करने में विफल रहता है। और यह पाप की भ्रष्टता और उसके परिणामों के साथ उनके जीवनों को नुकसान पहुँचाता है।

क्या आप कभी ऐसे मसीही लोगों से मिले हैं जो मानते हैं कि वे परमेश्वर की आज्ञा को तब तक तोड़ सकते हैं, जब तक कि वे प्रेम से प्रेरित थे? या ऐसे लोग जो यह मानते थे कि यदि वे परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता यदि वे किसी से प्रेम करते थे? इन दोनों प्रकार के लोगों की सोच गलत है। हम परमेश्वर और अपने पड़ोसियों को तभी प्रेम करते हैं जब हम उन्हें उस रूप में मानते हैं जैसे परमेश्वर की वाचा चाहती है। और हमारे कार्य परमेश्वर की व्यवस्था को तभी निभाते हैं जब वे वाचा वाले प्रेम से प्रेरित होते हैं। यही कारण है जो पाप करने को इतना आसान बनाता है। पाप को इसकी परवाह नहीं कि हम किस आधे भाग को नरअंदाज करते हैं। चाहे हम व्यवस्था के विरोधी हों या प्रेम न करने वाले, पाप जीतता है। यही कारण है कि पाप के चरित्र को समझना विश्वासियों के लिए महत्वपूर्ण है। क्योंकि जब हम इसे समझ लेते हैं, तो हम इससे बचने के लिए बेहतर तरीके से तैयार होते हैं, और इससे हमारी मुक्ति के लिए हम और अधिक आभारी होते हैं।

पाप के अभिशाप पर अभी तक अपने अध्याय में, हमने मानव पाप की शुरुआत का पता लगाया है, और पाप के मूल चरित्र का वर्णन किया है। अब हम अपने तीसरे प्रमुख विषय को संबोधित करने के लिए तैयार हैं: पाप के परिणाम।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परिणाम

पारंपरिक व्यवस्थित ईश्वरीय-ज्ञान में, यह शब्द "मूल पाप" मानवता के पहले पाप के परिणामों को संदर्भित करता है। विभिन्न धर्मवैज्ञानियों ने मूल पाप के विवरणों को अलग-अलग तरीकों से समझाया है। लेकिन प्रत्येक मामले में, ध्यान केंद्रण जिस पर किया गया है:

> वह दशा है जिसमें आदम के प्राकृतिक वंशज आदम के पाप में पतन के परिणामस्वरूप पैदा होते हैं।

आदम की अनाज्ञाकारिता प्रत्येक मनुष्य को नकारात्मक रीति से प्रभावित करती है जो स्वभाविक रूप से उससे पैदा हुए हैं। सिर्फ यीशु ही मूल पाप बचे रहे थे।

> मूल पाप, संक्षेप में, वह पाप है, जिसे मूलभूत रूप में, कोई व्यक्ति तब से धारण करता है जब वह पैदा हुआ था। और कोई भी व्यक्ति इस पाप से बच नहीं सकता। जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को इसे स्वीकार करना चाहिए क्योंकि लोग पापी वंश से पैदा होते हैं। मैं एक उदाहरण देता हूँ। किसी शेर के लिए मेमने को जन्म देना संभव नहीं है, और आदम के वंशज, किसी पापी मनुष्य के लिए यह संभव नहीं है कि वह एक पवित्र व्यक्ति को जन्म दे, ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के समक्ष धर्मी हो। और यह वह पाप है जो पहले ही से अस्तित्व में है। यद्यपि हम इसे अपने विचारों द्वारा नहीं करते, अपने वचनों द्वारा नहीं करते, हम इसे अपने कार्यों द्वारा नहीं करते, यह पहले ही से है। और हमारे बीच ऐसा कोई नहीं है जो इससे बच सके। यह वह है जिसे "मूल पाप" कहा जाता है। जैसे कि दाऊद ने भजन 51 में कहा, "देख मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।"
>
> — योहनेस प्रैप्टोवॉरसो, Ph.D., अनुवादित

इस अध्याय में अपने उद्देश्यों के लिए, हम मानवता के पाप में पतन के तीन परिणामों पर ध्यान केंद्रित करेंगे: भ्रष्टता, अलगाव और मृत्यु। आइए भ्रष्टता के साथ शुरू करते हैं।

भ्रष्टता

आपको याद होगा कि जब आदम और हव्वा ने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से खाया, तो इसने उन्हें बदतर हालात के लिए बदल दिया। इससे पहले, हम ने उल्लेख किया था कि हिप्पो के बिशप, अगस्तीन ने मानवता के मूल पापरहित दशा को *पोसे नॉन पेकारे* के रूप में वर्णित किया, अर्थात कि मानवता में पाप न करने की क्षमता थी। लेकिन आदम और हव्वा के पाप करने के बाद, उन्होंने यह क्षमता खो दी, और केवल पाप करने की क्षमता को बनाए रखा। अगस्तीन ने उनकी नई दशा का वर्णन *नॉन पोसे नॉन पेकारे* के रूप में किया — पाप न करने की असमर्थता। आदम और हव्वा द्वारा भुगती गई भ्रष्टता ने परमेश्वर को प्रसन्न करने और उसकी आशीषों को हासिल करने की उनकी क्षमता को खत्म कर दिया, और उनके पास केवल पाप करने की और परमेश्वर के अभिशापों को पाने के क्षमता रह गई।

अब, जैसा कि हम उत्पत्ति 3:12, 13 में देखते हैं आदम और हव्वा ने, हालांकि अपूर्ण रूप से, अपने पाप को माना लिया। और जो पद उसके बाद आते हैं, उनमें परमेश्वर उनके साथ उदार था। वह उन्हें उनके पाप के लिए एकदम मार सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। इसके विपरीत, उसने उन पर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दया दिखाई। और उत्पत्ति 3:15 में, उसने उन्हें पाप और उसके प्रभावों से बचाने के लिए एक उद्धारकर्ता भेजने की भी प्रतिज्ञा की। विश्वास और पश्चाताप के माध्यम से जो आदम और हव्वा ने प्रकट किया, परमेश्वर ने उनकी आत्माओं को नवीनीकृत किया और पाप से बचने की उनकी योग्यता को बहाल किया।

दुर्भाग्य से, उनकी व्यक्तिगत बहाली उनके प्राकृतिक वंशजों तक नहीं पहुँची। बाकी की मानव जाति पाप न करने की असमर्थता के साथ पैदा होने के लिए लिए नियत कर दी गई। यीशु और पौलुस ने नैतिक भ्रष्टता की इस दशा की तुलना यूहन्ना 8:31-44, और रोमियों 6:6-20 जैसे स्थानों में पाप का दास होने से की है। और हम सभी तब तक भ्रष्टता की इस दशा में रहते हैं जब तक कि परमेश्वर हमें ठीक उसी तरह से नहीं बचाता है, जैसे उसने आदम और हव्वा को बचाया था।

लूका 6:43-45 में, यीशु ने हमारी भ्रष्ट दशा की तुलना एक बुरे पेड़ से की है जो केवल बुरा फल ही पैदा सकता है। उनका यह अर्थ नहीं था कि बचाई न गई एवं पाप में पतित हुई मानवता कभी भी बाहरी रूप से कुछ भी भलाई नहीं करती है। वे फिर भी अपने बच्चों की देखभाल करते हैं, नागरिक कानूनों का सम्मान करते हैं, और इसी तरह अन्य भी। लेकिन पाप की भ्रष्टता उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति सम्मान के कारण, या परमेश्वर एवं पड़ोसी के लिए वाचा वाले प्रेम के कारण कार्य करने में असमर्थ बना देती है। और इसलिए, जो भी कुछ वे करते हैं, वह पाप से दूषित होता है। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 8:6-8 में कहा:

> **शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है ... क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है। क्योंकि न तो वह परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है। जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (रोमियों 8:6-8)।**

दुर्भाग्य से पाप में पतित मानवता के लिए, पाप से बचने में हमारी भ्रष्टता हमारी असमर्थता तक ही सीमित नहीं है। यह मानव स्वभाव के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करती है। विभिन्न ईश्वरीय-ज्ञान की परंपराएं इस भ्रष्टता की सीमा को अलग-अलग तरीकों से समझती हैं। लेकिन हम इस बात से सहमत हो सकते हैं कि हमारे शरीरों एवं आत्माओं के प्रत्येक भाग सहित, हमारे मानव स्वभाव का प्रत्येक संकाय प्रभावित हुआ है। उदाहरण के लिए, जैसा कि परमेश्वर ने उत्पत्ति 3:16-19 में कहा है, हमारे शरीर पीड़ित होते एवं मरते हैं। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 3:11 में इंगित किया, हमारे दिमाग समझते नहीं हैं। और जैसा कि यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:16 में समझाया है, हमारे मन पाप की अभिलाषा करता है।

पाप हमारे जीवनों में प्रसरणशील है। यह पाप में पतित मानवता के अस्तित्व के प्रत्येक भाग को भ्रष्ट करती है — हमारे शरीरों, हमारी आत्माएँ, हमारी बुद्धि, और हमारी इच्छाएँ, हमारी सोच, और बाकी सब कुछ को। और परिणामस्वरूप, यह उस हर चीज़ को भी भ्रष्ट करता है जो हमारे अस्तित्व से निकलती है — वह सब जो हम सोचते, करते और महसूस करते हैं। जब हम मसीह पर विश्वास लाते हैं, तो परमेश्वर हमें उन तरीकों में नवीनीकृत करता है जो इन सभी क्षेत्रों में उसे प्रसन्न करने की हमारी योग्यता को बहाल करता है। लेकिन उन लोगों के लिए जो अभी तक बचाये नहीं गए हैं, पाप उन सभी चीज़ों में जो वे करते हैं, स्वयं को व्यक्त करता है।

उन पापी अवधारणाओं के साथ शुरू करते हुए जिन्हें हम ग्रहण करते हैं, सिर्फ तीन तरीकों पर विचार करें जिनमें पवित्र शास्त्र पाप के बारे में बताता, जिन्हें हमारी भ्रष्टता हमारे विश्वास में आने से पहले पैदा करती हैं।

अवधारणाएं

हव्वा की अवधारणाएं भ्रष्ट हो गई थी जब उसने परमेश्वर के उद्देश्यों और निषिद्ध फल के प्रभावों के बारे में सर्प के झूठ पर विश्वास किया। और आदम की अवधारणाएं भी उसी तरह से भ्रष्ट हो गई जब

उसने निर्धारित किया कि फल खाने लायक था। लेकिन उन भ्रष्टताओं के बारे में सबसे भयानक बात यह है कि परमेश्वर के अभिशाप के माध्यम से वे आने वाले सभी मनुष्यों के लिए हस्तांतरित हुए।

जैसा कि हम ने पहले के अध्याय में देखा, पाप ने वैचारिक सोच के लिए मानवता की क्षमता को नुकसान पहुंचाया है, और हमें विश्वास करने के लिए प्रेरित किया है कि झूठे विचार सत्य हैं। सबोपदेशक 9:3, और यिर्मयाह 17:9 कहते हैं कि पाप हम सभी को कुछ तरीकों से पागल बनाता है। हम उस बात को महत्व नहीं देते हैं जिसे परमेश्वर महत्व देता है, और हम स्वयं को बुराई के लिए समर्पित करते हैं। व्यवस्थाविवरण 29:2-4 कहता है कि पापी बुद्धि को परमेश्वर के चमत्कारों को समझने में मुश्किल होती है। और यूहन्ना 8:43-47 सिखाता है कि पाप के कारण हम झूठ को ग्रहण करते हैं और वह हमें सत्य को स्वीकार करने से रोकता है। इफिसियों 4:17-18 में, पौलुस ने पाप के प्रभाव का इस रीति से वर्णन किया:

> **अन्यजातिय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर [चलते] हैं। क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है, और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं (इफिसियों 4:17-18)।**

जब भी हम सत्य पर विश्वास करने में विफल होते हैं, तो यह इसलिए है क्योंकि पाप ने हमारी अवधारणाओं को भ्रष्ट कर दिया है। इससे भी बुरा है, कि हमारी कई गलत अवधारणाएं स्वयं पापी हैं। हमारे लिए उन अवधारणाओं को गलत समझना पाप नहीं है जो समझने हेतु हमारे लिए बहुत मुश्किल हैं, या उन बातों से अनभिज्ञ होना जिनको सीखने का हमें अवसर नहीं मिला। लेकिन झूठे सिद्धांत और बाइबल से हट कर सोचने के तरीकों की पुष्टि करना हमारे लिए पाप *है*। इसलिए 1 तिमुथियुस 6:3-5 में, पौलुस ने झूठे शिक्षकों पर उनकी अपराधिक अज्ञानता और भ्रष्ट बुद्धि के कारण पाप करने का आरोप लगाया। झूठे सिद्धांत और गलत विचार ऐसे झूठ हैं जो परमेश्वर की सच्चाई को धुंधला करते हैं और हमें और पाप में धकेलते हैं।

> **परमेश्वर, परमेश्वर है और वह सही एवं उचित रीति से जानने योग्य है। यह जानने के लिए कि वह सही रीति क्या है और सही सिद्धांतों को रखने के लिए हम उसके प्रति उतरदायित्व है क्योंकि परमेश्वर कौन है और उसके साथ हमारे संबंध को सही सिद्धांत वर्णित करता है। इसलिए, सबसे पहले, हमारे सबसे बेहरीन विचार और उसके बारे में सिद्धता से जितना भी हो सके सही तरीके से हमारी सोच के योग्य परमेश्वर है। और इसलिए, सही सिद्धांत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह परमेश्वर को सम्मानित करता है। यह उसका आदर करता है। हम उसे ऐसा जानना चाहते हैं जैसा वह वास्तव में है। हम उसके बारे में उस सत्य को जानना चाहते है जो उसने हम पर प्रकट किया है। यही, निश्चित रूप से, पवित्र शास्त्र का उद्देश्य है, ताकि हम वह जान सकें। दूसरा, नया नियम झूठे सिद्धांत के ख़िलाफ़ इतनी दृढ़ता से बोलता है क्योंकि यह जीवन जीने के झूठे तरीके की ओर ले जाता है। यह पाप की ओर ले जाता है, परमेश्वर से दूर होने के लिए। जब हम परमेश्वर को सही रीति से नहीं जानते हैं, जब हमारे पास परमेश्वर के बारे में पवित्र शास्त्र से अलग दृष्टिकोण होता है, तब हम एक असहाय जीवन जी रहे होते हैं। हम उसकी वैसी सेवा नहीं कर पायेंगे जैसा वह चाहता है कि हम उसकी सेवा करें। इसलिए, यही कारण है कि नया नियम झूठे सिद्धांत के ख़िलाफ़ इतनी दृढ़ता से बोलता है।**
>
> **— डॉ. गैरेथ कॉकरिल**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हमारी भ्रष्टता का दूसरा परिणाम पापी व्यवहार हैं जिन्हें हम करते हैं।

व्यवहार

आदम और हव्वा का व्यवहार शायद उनके पाप का सबसे स्पष्ट पहलू था: उन्होंने निषिद्ध फल खाया। और इस पाप ने उन सभी व्यवहारिक पापों के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य किया जिन्होंने तब से मानवता को त्रस्त किया है। उसके बाद, जैसा कि हम उत्पत्ति 6:5 में पढ़ते हैं, परमेश्वर पापी मानव व्यवहार से इतना क्रोधित था कि उसने पूरी जाति को जल प्रलय से नष्ट कर दिया, और संसार को फिर से आबाद करने के लिए केवल नूह और उसके परिवार को बचाया।

अफसोस की बात है कि मानव जाति ने इस बार भी कुछ बेहतर नहीं किया है। हम अभी भी सभी तरह के व्यवहारिक पाप करते हैं। वास्तव में, रोमियों 1 में, पौलुस ने तर्क दिया कि एक कारण हम इतना पाप करते हैं, वह है कि परमेश्वर ने हमें हमारी पापी अभिलाषाओं के वश में छोड़ दिया है। उसी अध्याय में, पौलुस ने उन व्यवहारों का एक भयावह विवरण भी दिया जो अब हमें हमारे उद्धार न पाए एवं पाप में पतित वाली दशा में चित्रित करता है। रोमियों 1:29-32 में पौलुस ने जो लिखा उसे सुनिए:

> वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता और लोभ और बैरभाव से भर गए। और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए। और चुगलखोर, बदनाम करने वाले, परमेश्वर से घृणा करनेवाले, दूसरों का अनादर करने वाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी बुरी बातों के बताने वाले, माता पिता की आज्ञा न मानने वाले, निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दय हो गए। वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करने वाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं वरन् करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं (रोमियों 1:29-32)।

> आप जानते हैं, कि जब बीसवीं सदी की शुरूआत हुई, तो संसार में बहुत ज्यादा आशावाद था, विशेषकर पश्चिमी संसार में, जिसका कारण था, विज्ञान की उन्नति के कारण, शिक्षा की व्यापक उपलब्धता के कारण, सभी खोजों, तकनाकी प्रगति और बहुत कुछ के कारण, दार्शनिकों और सामाजिक वैज्ञानिकों और उदारवादी धर्मवैज्ञानियों में भी, आशावाद की यह महान आभा थी कि बीसवीं सदी शांति की सदी होगी जिसमें आगे को कोई युद्ध नहीं होगा। बीसवीं सदी ऐसी सदी होगी जिसमें मानव बुद्धि शासन करेगी, और बौद्धिक प्राणी एक दूसरे की हत्या नहीं करेंगे। इस तरह, इस भारी उम्मीद में हम एक ऐसी सदी में प्रवेश कर रहे थे जिसमें शांति होगी, आपने देखा, इस प्रकार की बात में जो समस्या है ... और मार्क्सवाद में यही समस्या थी। इसमें आशावादी मानव-विज्ञान था जो सामाजिक आपदाओं की ओर ले गया क्योंकि इसमें पाप का सिद्धांत नहीं था। और तो क्या हुआ? आपके पास प्रथम विश्व युद्ध था। आपके पास बोलशेविक क्रांति थी। बाद में आपके पास होलोकॉस्ट, द्वितीय विश्वयुद्ध, हिटलर, नाजीवाद और हम और ज्यादा गिन सकते हैं। और इस तरह, परिणामस्वरूप, गणना करने पर बीसवीं सदी में, कोई 11.28 करोड़ लोग युद्ध में मारे गए हैं। मैं सिर्फ युद्ध की बात कर रहा हूँ — नागरिकों और सैनिकों की, जहाँ पर रिकॉर्ड किए गए आँकड़ों ने हमें गणना करने की अनुमति दी है। यह पिछली चार शताब्दियों को जोड़ दे तो उससे लगभग चार गुणा ज्यादा है। यह हमें क्या बताता है? कि कुछ तो गलत है, न केवल सामाजिक स्थितियों में। सभी ज्ञान, विज्ञान की प्रगति और सभ्यता की प्रगति के साथ, मानव स्वभाव के साथ मौलिक रूप से कुछ तो गलत है। और यह है जिसे हम —

> मसीही लोग — "पाप" कह रहे हैं। अब यह मीडिया में, शिक्षण में और इसी तरह से, बहुत लोकप्रिय शब्द नहीं है, और फिर भी जैसा कि रेनहोल्ड नेबुहर ने कहा, पाप वाला मसीही सिद्धांत सभी सिद्धांतों में सबसे कम लोकप्रिय है, और फिर भी जिसके लिए हमारे पास सबसे अधिक आनुभाविक साक्ष्य हैं।
>
> — डॉ. पीटर कुज़मिश

हमारी भ्रष्टता का तीसरा परिणाम जिसका हम उल्लेख करेंगे, वह है हमारी पापी भावनाएँ।

भावनाएँ

जैसा कि हमने देखा, परमेश्वर की व्यवस्था की पहली और दूसरी सबसे बड़ी आज्ञाएँ दोनों प्रेम करने के लिए हैं: पहली, परमेश्वर से प्रेम करना; और दूसरी, अपने पड़ोसी से प्रेम करना। और बेशक, प्रेम एक भावना है, कम से कम कुछ भाग में। यह एक प्रेरणा है जो हमें हमारे जीवन के हर क्षेत्र में आज्ञाकारिता के लिए प्रेरित करता है। इसलिए, हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि पापी भ्रष्टता हमारी भावनाओं को भी प्रभावित करता है, हमें परमेश्वर एवं अपने पड़ोसियों को जैसा हमें करना चाहिए वैसे प्रेम करने से रोकता है, और हमें इस प्रेम से निकलने वाले अन्य धर्मी भावनाओं को प्रकट करने से रोकता है।

आदम और हव्वा की भावनाओं की भ्रष्टता स्वयं उनके पाप में, उसके तत्काल प्रभाव में और उसके स्थायी अभिशाप में शामिल थी। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 3:6 में, हव्वा ने उस ज्ञान की इच्छा की जिसे निषिद्ध फल ने पेश किया। पद 7-10 में आदम और हव्वा को अपने नंगेपन पर शर्मिंदगी महसूस हुई। और पद 16 में, परमेश्वर ने उस तरीके को शापित किया जिनमें उनकी भावनाएँ और इच्छाएँ उनके वैवाहिक संबंधों को प्रभावित करेंगे।

और ऐसा ही कुछ सत्य हर मनुष्य की भावनाओं का पाप के द्वारा भ्रष्ट किए जाने के बारे में है। हम सभी लोभ, वासना, अभिमान, घृणा, अधार्मिक क्रोध और अन्य सभी तरह की पापी भावनाओं के साथ संघर्ष करते हैं। जैसा कि यीशु ने मरकुस 7:21-22 में कहा:

> क्योंकि भीतर से, अर्थात मनुष्य के मन से, बुरे बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मुर्खता निकलती है (मरकुस 7:21-22)।

इससे पहले कि हम कार्य करते हैं, हमारी पापी भावनाएँ और इच्छाएँ हमें पापी विचारों एवं व्यवहारों की ओर खींचती हैं। याकूब ने इसे इस तरीके से याकूब 1:14-15 में लिखा है:

> परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है (याकूब 1:14-15)।

हमारे पापी स्वभाव में, यहाँ तक कि परमेश्वर की व्यवस्था के लिए बाहरी आज्ञापालन भी असंभव है। लेकिन जब हम अपनी भावनाओं की भ्रष्टता, परमेश्वर और अपने पड़ोसी को जैसा हमें करना चाहिए वैसा प्रेम करने की अपनी असमर्थता पर विचार करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उसके उद्धार वाले अनुग्रह से हटकर, हम में परमेश्वर को प्रसन्न करने की कोई योग्यता नहीं है।

यह देखने के बाद कि व्यापक भ्रष्टता मानवता के पाप में पतन के भयानक परिणामों में से एक है, आइए परमेश्वर से और अन्य मनुष्यों से हमारे अलगाव का पता लगायें।

अलगाव

> पाप के प्रभाव को बढ़ाचढ़ा कर बताना वास्तव में असंभव है। सबसे पहला, पाप की मजदूरी तो मृत्यु है। पाप के कारण मृत्यु मानवीय अनुभव में प्रवेश करता है। पाप के कारण हम सब मरेंगे। दूसरा, पाप के कारण हम सब परमेश्वर से अलग किए गए हैं। हमारी पापमयता के कारण, हमारे संबंध टूट गए हैं और उसके साथ जुड़े रहने का हमारे पास कोई अधिकार नहीं है। और तीसरा, पाप के कारण, एक दूसरे के साथ हमारे संबंध टूट गए हैं, खंडित हो गए और टुकड़े टुकड़े हो गए हैं। क्योंकि हम अपनी जरूरतों को पहले रखना चाहते हैं और अपने आप को दूसरों से आगे रखते हैं और घमंड और स्वार्थ और छल से भरे हुए हैं, इसलिए हम पूर्ण सद्भाव में एक साथ रह पाने में विफल रहते हैं। तो, पाप के कारण यह सब स्पष्ट करने योग्य है।
>
> — डॉ. कॉन्स्टेन्टीन कैम्पबेल

परमेश्वर के साथ सहभागिता में इस संसार पर शासन करने के लिए मनुष्यों को परमेश्वर के स्वरूप में सृजा गया था। हमसे पूरी पृथ्वी को भरने के लिए अदन की वाटिका का विस्तार करने की आशा की गई थी, ताकि सारी सृष्टि उसका पृथ्वी वाला राज्य बन जाए। और यह कि उस राज्य में, परमेश्वर हमारे साथ रहेगा और अपनी उपस्थिति हम पर प्रकट करेगा। और हम से परमेश्वर के उप-राज्य प्रतिनिधि या दास राजाओं के रूप में सृष्टि पर सहयोगपूर्वक और प्रेमपूर्वक शासन करते हुए, एक एकीकृत जाति के रूप में भी रहने की आशा की गई थी।

लेकिन पाप ने परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता को तोड़ डाला, और एक दूसरे के साथ हमारे संबंधों को नुकसान पहुँचाया। इसके कारण परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिया। उत्पत्ति 3:24 कहता है कि उसने उसके फाटकों पर स्वर्गदूतों को यह सुनिश्चित करने के लिए तैनात कर दिया कि वे फिर से अन्दर न आ सकें। परिणामस्वरूप, मानवता को परमेश्वर की उपस्थिति और सुरक्षा से दूर अदम्य जंगल में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। और जैसा कि हम उत्पत्ति 4–6 में पढ़ते हैं, जंगल में मानवता जल्द ही एक दूसरे के ख़िलाफ हो गई। कैन ने अपने भाई हाबिल की हत्या कर दी, और ऐसे लोगों की कई पीढ़ियों का पिता बन गया जो दूसरों के साथ बुरा व्यवहार करते थे। आखिरकार, मानवता का एक दूसरे के साथ दुर्व्यवहार इतना ज्यादा बढ़ गया कि परमेश्वर नूह के दिनों में पूरे संसार पर जल प्रलय लाया।

परमेश्वर से और एक दूसरे से मानवता का अलगाव इतने भयानक तरीके से तब से जारी है। हम अब परमेश्वर की तत्काल उपस्थिति में नहीं चलते हैं जैसे आदम और हव्वा ने किया था; इसके बजाय, हम उससे नफरत करते हैं और उसके साथ लड़ाई करते हैं। और झूठ, धोखा, घृणा, कलह और सब प्रकार के अन्य संबंधपरक समस्याएं हमें अन्य लोगों के साथ शांतिपूर्वक और सहयोगपूर्वक रहने से रोकते हैं।

जैसा कि हम ने देखा, इस अलगाव का शुरुआती कारण आदम और हव्वा का परमेश्वर के ख़िलाफ विद्रोह वाला कार्य जब उन्होंने निषिद्ध फल को खाया। अपने पाप में, हमारे पहले माता पिता ने परमेश्वर के अधिकार के ऊपर अपने अधिकार पर दावा जताया। यह परमेश्वर की वाचा के ख़िलाफ देशद्रोह का कार्य था जिसने हमारी पूरी जाति को परमेश्वर के दुश्मनों में बदल डाला।

इफिसियों के अपने पत्र में, पौलुस ने खुलासा किया कि मानवता के पाप में पतन के कारण, पाप में पतित हमारी पूरी जाति शैतान के राज्य के साथ जुड़ गई। हम इस आत्मिक युद्ध में परमेश्वर के करीबी सहयोगी होने के बजाय दुश्मन के लड़ाके बन गए। परिणामस्वरूप, हम में से प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की

कृपा और अनुग्रह से पूरे अलगाव में जीवन की शुरुआत करता है। हम उसे केवल अपने स्वभाविक दुश्मन के रूप में जानते हैं। इफिसियों 2:1-3 में, पौलुस ने अपने श्रोताओं को उनके उद्धार से पहले के इस विवरण को पेश किया:

> **तुम अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे, जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की इच्छाएँ पूरी करते थे। और अन्य लोगों के समान, स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे (इफिसियों 2:1-3)।**

ध्यान दीजिए कि जब पौलुस कहता है कि "हम भी सब के सब" इसी रीति से रहते थे तो उसने इस विवरण को प्रत्येक उद्धार न पाए एवं पाप में पतित मनुष्य के लिए लागू किया। उसने इसी बात को रोमियों 5:10 में भी कहा, जहाँ उसने लिखा:

> **क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ (रोमियों 5:10)।**

हम उससे केवल इसलिए अलग नहीं हुए हैं क्योंकि हमारा संबंध तनावपूर्ण हो गया, या क्योंकि हम उसकी तत्काल उपस्थिति में नहीं रह सकते हैं। यह उससे बहुत ज़्यादा बदतर है। मानवता के पाप में पतन ने हमें परमेश्वर का शत्रु बना दिया।

और जबकि इसने अन्य मनुष्यों के साथ हमारे संबंधों को उसी सीमा तक नुकसान नहीं पहुँचाया, पाप में पतन अभी भी कई तरीकों में हमें एक दूसरे से अलग करता है। बेशक, हमारे पाप ने मनुष्यों के बीच में कई शत्रुओं और युद्धों को पैदा किया है। लेकिन यह हमारी और सामान्य संबंधपरक समस्याओं के लिए भी जिम्मेदार है। उसी रीति से जैसे इसने आदम और हव्वा के लिए शर्मिंदगी और वैवाहिक तनाव को पैदा किया, यह हर विवाह में भी समस्या को पैदा करता है। जिस तरह से इसने उनके बच्चों में हिंसा को पैदा किया, उसी तरह यह हर समाज में भी हिंसा को पैदा करता है। यह हमें एक-दूसरे से झूठ बोलने, एक-दूसरे से घृणा करने, एक-दूसरे को नुकसान पहुँचाने, अपमान लेने और अपमानित करने के लिए प्रेरित करता है। यह हमें ईष्र्यालु, द्वेषपूर्ण, क्षमा न करने वाला बनाता है। और यहाँ तक कि विश्वासियों में भी, जब परमेश्वर ने हमें पाप की हमारी आशाहीन दासता से बचाया है, हम फिर भी एक-दूसरे के साथ प्रेम और करुणा के साथ व्यवहार करने में संघर्ष करते हैं। जैसा कि याकूब ने विश्वासियों को याकूब 4:1-2 में लिखा:

> **तुम में लड़ाइयाँ और झगड़े कहाँ से आ गए? क्या उन सुख-विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते-भिड़ते हैं? तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं। इसलिए, तुम हत्या करते हो, तुम डाह करते हो, और कुछ प्राप्त नहीं कर पाते। तो तुम झगड़ते और लड़ते हो (याकूब 4:1-2)।**

पाप में मानवता के पतन ने हमें दोनों परमेश्वर और एक-दूसरे से अलग कर दिया है। हमें परमेश्वर के साथ और अन्य लोगों के साथ शांतिपूर्ण, प्रेमपूर्ण संबंधों में रहने के लिए रचा गया था। जिस परमेश्वर की सेवा हम करते थे उसके चारों ओर अपने जीवनों को केंद्रित करके एक साथ रहने और कार्य करने की हम से आशा की गई थी। लेकिन पाप में पतन ने हमें स्वार्थी, घमंडी और घृणास्पद बना दिया। इसलिए, परमेश्वर की सेवा करने के बजाय, हम उसका विरोध करते हैं। दूसरों के साथ निस्वार्थ भाव से रहने के बजाय, जो उनके पास है हम उसका लालच करते हैं और अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हम उनका

इस्तेमाल करते हैं। नहीं, हम उतने बुरे भी नहीं हैं जितना कि हम हो सकते हैं। और हम पाप में पतित मानवीय संबंधों में अच्छाई के अवशेषों को भी देखते हैं। लेकिन यह वैसा नहीं है जैसा इसको होना चाहिए। पाप ने परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को नष्ट कर दिया है, और दूसरों के साथ हमारे संबंधों को गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त कर दिया है। परमेश्वर के अनुग्रह से हटकर, इन समस्याओं का कोई समाधान नहीं है।

अभी तक, हमने भ्रष्टता और अलगाव के संदर्भ में मानवता के पाप में पतन के परिणामों पर विचार किया है। अब हम मृत्यु के विषय को संबोधित करने के लिए तैयार हैं।

मृत्यु

उत्पत्ति 2:17 में, परमेश्वर ने आदम से कहा कि यदि उसने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाया, तो वह मर जाएगा। फिर, जब आदम ने फल खाया, तो उत्पत्ति 3:19 रिकॉर्ड करता है कि परमेश्वर ने आदम को शारीरिक मृत्यु के लिए श्राप दिया। लेकिन, जैसा कि हम ने पहले उल्लेख किया, आदम के पाप और उसके अभिशाप सिर्फ आदम को ही प्रभावित नहीं करते हैं। आख़िरकार, वह समस्त मानव जाति का वाचा वाला मुखिया था। वह हमारा राजा था। इसलिए, जब उसने परमेश्वर के ख़िलाफ विद्रोह किया, तो हमारा पूरा मानव संसार उसके दोष की छाया में और, परिणामस्वरूप, मृत्यु के अभिशाप के तले गिर गया। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 5:12-17 में कहा:

> इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सब ने पाप किया ... [एक] मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे ...एक मनुष्य के अपराध के [कारण] मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया (रोमियों 5:12-17)।

पौलुस ने कहा कि सब ने पाप किया क्योंकि परमेश्वर ने आदम के दोष को न सिर्फ आदम के लिए गिना, बल्कि शेष प्राकृतिक मानवता के लिए भी गिना। और इस दोष का परिणाम हमारी मृत्यु है। मूल पाप के न्यायिक दृष्टिकोण से, प्रत्येक मनुष्य उतना ही दोषी है जितना कि आदम था। इसलिए, यदि आदम मृत्यु के लायक था — और वह था भी — तब हम भी उसी लायक हैं। और यही कारण है हम मर जाते हैं। मसीह पर विश्वास करने के बाद भी, पाप का अभिशाप हमारे शरीरों पर लदा रहता है। परिणामस्वरूप, आदम के समान, हम सब अंततः मर जाते हैं और मिट्टी में मिल जाते हैं।

अब, जब परमेश्वर ने आदम को शापित किया तो उसकी तुरंत मृत्यु नहीं हुई थी — कम से कम शारीरिक रूप से नहीं। और यही बात बाकी हम सब के लिए भी सत्य है। परमेश्वर हमें पृथ्वी पर एक शारीरिक जीवन काल की अनुमति देता है। लेकिन पवित्र शास्त्र का अर्थ है कि जब आदम को शापित किया गया तो वह आत्मिक रूप से मर गया, और यह कि उसके प्राकृतिक वंशज विश्वास में आने से पहले आत्मिक रूप से मरे हुए हैं।

> आत्मिक मृत्यु के प्रश्न को इफिसियों 2 में बहुत अच्छी तरह से संबोधित किया गया है। मूल रूप से, पौलुस कहता है कि हम अपने पापों और अपराधों में मरे हुए हैं। तो वहाँ पर सोच यह है कि हम मरे हुए हैं और एक मरा हुआ व्यक्ति वास्तव में परमेश्वर को प्रसन्न करने के संबंध में बहुत कुछ नहीं कर सकता है। और विशेष रूप से, मैं सोचता हूँ, कि पौलुस हमारे कार्य के विषय को संबोधित कर रहा है और परमेश्वर हमारे कार्यों को कैसे देखता है। अध्याय 2 में यही पद आगे कहता है कि ... हम इस संसार के हाकिम के अनुसार चलते थे। हमारी स्वाभाविक प्रवृति के कारण हम उन कार्यों को करते हैं जो वह हमसे चाहता है कि हम करें।

> जब हम अपने पापों में मरे हुए हैं, तो हम मृत्यु के अगुवे का अनुसरण करते हैं जो कि शैतान है। जब मसीह में हमें जिलाया जाता है ... तो हमें नया जीवन दिया जाता है। यह नया जीवन है। यह ऐसा जीवन है जो हमें कार्य करने, उन कार्यों को करने की अनुमति देता है, जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, लेकिन वह केवल संभव है ... यीशु मसीह के जीवन और मृत्यु और पुनरुत्थान और उस पर हमारे विश्वास के द्वारा।
>
> — रेव्ह. तिमोथी मॉन्टफोर्ट

पौलुस ने इफिसियों 2:1-5 में आत्मिक मृत्यु का वर्णन किया जब उसने कहा:

> तुम अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे, जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इन में हम भी सब के सब पहिले ,,, दिन बिताते थे ... परन्तु परमेश्वर ने ... जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया (इफिसियों 2:1-5)।

पौलुस ने जिन लोगों का वर्णन किया वे शारीरिक रूप से जीवित थे। वे पाप में लिप्त थे, और आत्मिक युद्ध में परमेश्वर के ख़िलाफ लड़ते थे। लेकिन पौलुस ने उन्हें फिर भी "मृत" कहा क्योंकि वे परमेश्वर के दण्ड के अधीन थे, और क्योंकि उनमें परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए जरूरी आत्मिक जीवन शक्ति की कमी थी। पौलुस ने यह भी कहा कि विश्वासी भी उसी तरह से "मृत" हुआ करते थे। जब तक हम मसीह में आत्मिक जीवन को प्राप्त नहीं करते, तब तक पाप में पतित सभी मनुष्य इस आत्मिक रीति से मृत दशा को साझा करते हैं। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 8:10 में लिखा:

> यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है, परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है (रोमियों 8:10)।

यहाँ पौलुस ने कहा कि यदि मसीह हम में है तो हमारे पास आत्मिक जीवन है। निहितार्थ से, यदि मसीह हम में नहीं है, तो हम आत्मिक रीति से मरे हुए हैं।

पाप में आदम के पतन के कारण, जब हम सृजे जाते हैं तो मनुष्य तत्काल आत्मिक मृत्यु, और अंततः शारीरिक मृत्यु को भुगतता है। और इससे भी बदतर, यदि हम कभी भी मसीह पर विश्वास नहीं लाते हैं, यदि हम कभी परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा पाप के अभिशाप से छुटकारा नहीं पाते हैं, तो हम नरक में आत्मिक और शारीरिक दोनों मृत्यु को भुगतना जारी रखेंगे। और वर्तमान संसार में आत्मिक मृत्यु की ही तरह, यह भी एक सचेत अनुभव होगा। दोनों शरीर और आत्मा में पाप के अनंत अभिशाप को भुगतते हुए, उद्धार न पाए हुए लोग हमेशा के लिए अस्तित्व में रहेंगे। पाप का अभिशाप बहुत वास्तविक है। लेकिन परमेश्वर के अनुग्रह से, हम पाप के प्रभाव के ख़िलाफ अभी संघर्ष कर सकते हैं, और भविष्य में इससे पूरी तरह से बच सकते हैं।

उपसंहार

पाप के अभिशाप पर इस अध्याय में, हमने मानव जाति और व्यक्तिगत मनुष्य में पाप की उत्पत्ति का पता लगाया, और पाप के असली कर्तृत्व पर चर्चा की। हमने व्यवस्था के विरोधी और प्रेम न करने के रूप में पाप के आवश्यक चरित्र का भी वर्णन किया। और हमने भ्रष्टता, अलगाव और मृत्यु वाले पाप के परिणामों पर विचार किया।

यदि हमारे पास मसीह में आशा नहीं है तो मानव के पाप के भार के कारण हम निराश हो जाएंगे। जैसा कि हमने इस अध्याय में देखा, यह कोई छोटी बात नहीं है। यह एक भयानक बोझ है जो हमें इस जीवन में भ्रष्टता के बंधन में बाँधता है, और हमें अनंत मृत्यु की ओर घसीटता है। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक, द *पिल्ग्रिम प्रॉग्रेस* में, जॉन बनयन ने पाप का वर्णन हमारी पीठ पर बँधे एक भारी बोझ के रूप में किया है जिसको केवल मसीह के क्रूस द्वारा हटाया जा सकता है। हमारे अगले अध्याय में, हम देखेंगे कि जब हमारा उद्धारकर्ता हमें पाप के अभिशाप से छुटकारा देता है तो यह कैसे होता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।